जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, बुधवार, 17 फरवरी, 2016

गन्ने की फसल पर व्यवहारिक शोध जरुरी: डॉ.सोलोमन

स्थापना दिवस

आधुनिक गुड़ उत्पादन तकनीक पर निजी उद्यमियों के साथ एमओयू

छोटे किसानों के लिए सस्ता एवं टिकाऊ गन्ना कटाई यंत्र विकसित की जाये

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का 65वाँ स्थापना दिवस मना

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) का 65वाँ स्थापना दिवस संस्थान परिसर में मनाया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्यअतिथि के रुप में संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों को बधाई देते हुए संस्थान को देश तथा दुनिया में गन्ना शोध एवं विकास के क्षेत्र में सर्वोत्तम संस्थान बताया। साथ ही उन्होंने सभी वैज्ञानिकों से अपील करते हुए कहा कि आने वाले समय में व्यवहारिक शोध की दिशा में और अधिक कार्य करने की जरू रत है जिससे संस्थान चीनी उद्योग में अपनी उपस्थिति व पहचान और अधिक सशक्त कर सके। सिंचाई जल प्रबंधन, कार्बन ट्रैपिंग, जैविक प्रबंधन जैसे ज्वलंत विषयों पर गुणवत्ता पूर्ण शोध करते हुए तकनीक विकास करने का आह्वान वैज्ञानिकों से किया। साथ ही संस्थान द्वारा चलाए जा रहे तकनीकी हस्तांतरण कार्यक्रम की सराहना करते हुए संस्थान की तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. सोलोमन ने भविष्य की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि छोटे किसानों के लिए सस्ता एवं टिकाऊ गन्ना कटाई यंत्र संस्थान को विकसित करना चाहिए साथ ही उत्तर भारतीय गन्ना क्षेत्र का मृदा मैप विकसित करने की जरूरत है जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार कार्यक्रम को समग्र रूप से क्रियान्वित करने में बल मिलेगा।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. एडी पाठक ने संस्थान की पिछले पाँच वर्षों की प्रमुख उपलब्धियों को बताते हुए डॉ. पाठक ने बताया कि शीघ्र ही गन्ना की दो उन्नत किस्में कोलख 09202 एवं कोलख 09203 खेती के लिए अनुमोदित होने की संभावना है जिससे किसानों के लिए नई किस्मों की उपलब्धता बढ़ जाएगी तथा वे अधिक उत्पादन प्राप्त कर मुनाफा बढ़ा पायेंगे। इस अवसर पर डॉ. पाठक ने उद्घोषणा किया कि आधुनिक गुड़ उत्पादन तकनीक पर निजी उद्यमियों के साथ एमओयू हुआ । जिससे देश के पूर्वी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता का गुड़ वृहत स्तर पर उपलब्ध हो पायेगा। शरदकालीन गन्ने के साथ चुकन्दर की अन्तः फसली खेती के तकनीक का विकास संस्थान द्वारा होने से बायो-इथनॉल के उत्पादन में एक नया आयाम जुड़ गया है। डॉ. पाठक ने इस अवसर पर चीनी उद्योग, गन्ना किसानों तथा विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी क्षेत्र के प्रति संस्थान के योगदान को उद्धत करते हुए आगे भविष्य में भी निरन्तर योगदान के लिए प्रतिबद्धता को दोहराया। संस्थान के प्रसार एवं प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एके साह ने बताया कि इस वर्ष संस्थान गन्ना एवं चीनी उद्योग के विकास के लिए समेंकित कार्य योजना बनाया है जिसे आने वाले महीनों में क्रियान्वित किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मेरा गाँव-मेरा गौरव योजना प्रदेश के विभिन्न जिलों के चौसठ गाँवों में चलाया जा रहा है तथा प्रत्येक गाँव में मृदा जाँच कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किया जा रहा है। वसं.

आइआइएसआर के वार्षिक दिवस समारोह को संबोधित करते संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन

माघ शुक्ल 10 विक्रम 2072 YOUNG INDIA > YOUNG PAPER पेज 22 > मूल्य सिर्फ 3.00 ₹

NBT
नवभारत टाइम्स

आईआईएसआर ने मनाया 65वां स्थापना दिवस

■ एनबीटी, लखनऊ : 'सस्ता और टिकाऊ गन्ना कटाई यंत्र आईआईएसआर को विकसित करना चाहिए, ताकि किसानों को सीधे तौर पर फायदा पहुंचे।' यह बात भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने मंगलवार को आईआईएसआर के 65वें स्थापना दिवस पर हुए कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की तरक्की में वहां के वैज्ञानिकों का अहम रोल होता है, इसलिए अब भारतीय साइंटिस्ट को चाहिए कि सिंचाई जल प्रबंधन, कार्बन ट्रैपिंग और जैविक प्रबंधन जैसे ज्वलंत विषयों पर गुणवत्ता पूर्ण शोध करते हुए तकनीक विकास करके भारत को और आगे बढ़ाएं। संस्थान के निदेशक डॉ. एडी पाठक ने कहा कि जल्द ही गन्ना की दो उन्नत किस्में को लख और कोलख खेती के लिए अनुमोदित होने की संभावना है। इससे किसानों के लिए नई किस्मों की उपलब्धता बढ़ जाएगी। उन्होंने बताया कि आधुनिक गुड़ उत्पादन तकनीक पर निजी उद्यमियों के साथ एमओयू साइन हुआ है, जिससे देश के पूर्वी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता का गुड़ बड़े स्तर पर मुहैया हो पाएगा। इस मौके पर उत्पादन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके. शुक्ला मौजूद रहे।

नई तकनीकों से किसानों को करायें रूबरू

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का 65वां स्थापना दिवस

लखनऊ (सं.). भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का 65वाँ स्थापना दिवस संस्थान परिसर में मनाया गया। स्थापना दिवस कार्यक्रम में डॉ. सुशील सोलोमन, भूतपूर्व निदेशक मुख्य अतिथि थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. सोलोमन ने संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों को बधाई देते हुए इस संस्थान को पूरे देश तथा दुनिया में गन्ना शोध एवं विकास के क्षेत्र में सर्वोत्तम संस्थान बताया। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों से अपील करते हुए कहा कि आने वाले समय में व्यवहारिक शोध की दिशा में और अधिक कार्य करने की जरूरत है जिससे संस्थान चीनी उद्योग में अपनी उपस्थिति व पहचान और अधिक सशक्त कर सके। सिंचाई जल प्रबंधन, कार्बन ट्रैपिंग, जैविक प्रबंधन जैसे ज्वलंत विषयों पर गुणवत्ता पूर्ण शोध करते हुए तकनीक विकास करने का आह्वान वैज्ञानिकों से किया, साथ ही उन्होंने संस्थान द्वारा चलाए जा रहे तकनीकी हस्तांतरण कार्यक्रम की सराहना करते हुए संस्थान की तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. सोलोमन ने भविष्य की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि छोटे किसानों के लिए सस्ता एवं टिकाऊ गन्ना कटाई यंत्र संस्थान को विकसित करना चाहिए साथ ही उत्तर भारतीय गन्ना क्षेत्र का मृदा मैप विकसित करने की जरूरत है जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार कार्यक्रम को समग्र रूप से क्रियान्वित करने में बल मिलेगा। संस्थान के निदेशक डॉ. ए.डी. पाठक ने इस अवसर पर संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। पिछले पाँच वर्षों की प्रमुख उपलब्धियों को बताते हुए डॉ. पाठक ने बताया कि शीघ्र ही गन्ना की दो उन्नत किस्में कोलख 09202 एवं कोलख 09203 खेती के लिए अनुमोदित होने की संभावना है जिससे किसानों के लिए नई किस्मों की उपलब्धता बढ़ जाएगी तथा वे अधिक उत्पादन प्राप्त कर मुनाफा बढ़ा पायेंगे। इस अवसर पर डॉ. पाठक ने बताया कि आधुनिक गुड़ उत्पादन तकनीक पर निजी उद्यमियों के साथ एम.ओ.यू. हुआ है जिससे देश के पूर्वी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता का गुड़ वृहत स्तर पर उपलब्ध हो पायेगा। शरद्कालीन गन्ने के साथ चुकन्दर की अन्तः फसली खेती के तकनीक का विकास संस्थान द्वारा होने से बायो-इथनॉल के उत्पादन में एक नया आयाम जुड़ गया है। संस्थान में प्रसार एवं प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. ए.के. साह ने बताया कि इस वर्ष संस्थान गन्ना एवं चीनी उद्योग के विकास के लिए समेकित कार्य योजना बनाया है जिसे आने वाले महीनों में क्रियान्वित किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मेरा गाँव-मेरा गौरव योजना प्रदेश के विभिन्न जिलों के चौसठ गाँवों में चलाया जा रहा है तथा प्रत्येक गाँव में मृदा जाँच कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किया जा रहा है। इस अवसर पर बिहार के किसान, उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से गन्ना विकास कार्यकर्ता तथा तकनीकी अधिकारी उपस्थित थे, तथा उन्होंने गन्ना उत्पादन के उन्नत तकनीकों पर जानकारी प्राप्त किया। फसल उत्पादन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके शुक्ला ने सभी का स्वागत किया।

अमर उजाला राजधानी
लखनऊ। बुधवार। 17 फरवरी 2016

बाजार में जल्द आएंगी गन्ने की दो नई किस्में

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का 65वां स्थापना दिवस मंगलवार को मनाया गया। पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने वैज्ञानिकों से व्यवहारिक शोध की दिशा में ज्यादा ध्यान देने को कहा। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए सस्ता और टिकाऊ गन्ना कटाई यंत्र विकसित किया जाना चाहिए। संस्थान के निदेशक डॉ. एडी पाठक ने कहा कि जल्द ही गन्ना की दो नई किस्में कोलख 09202 और कोलख 09203 अनुमोदित होने की संभावना है। इसके बाद इन्हें बाजार में उतारा जाएगा। शरदकालीन गन्ने के साथ चुकंदर की मिलवां खेती को भी उन्होंने काफी फायदेमंद बताया।